



DR. LEELA JOSHI

Dr. Leela Joshi, a Gynecologist also known as Mother Terasa of Ratlam is working for more than two decades to reduce maternal mortality due to anemia in tribal, rural and urban slums of this tribal majority district of M.P. Ratlam.

2. Born on 20th October, 1938, Dr. Joshi passed her MBBS in 1961 from M.G.M. Medical College Indore and post-graduation from Mumbai and Gujrat. She joined Indian Railway Health Services and served in various capacity including Executive Director (H) in Ministry of Railways, New Delhi and Chief Medical Director, Indian Railways, Guwahati, Assam from where she retired in 1996.

3. After retirement, Dr. Joshi preferred to settle in Ratlam (rather than metro cities) with very clear mission to eradicate anemia in this marginalised group. Anemia is very prevalent in tribals and becomes worst in women during pregnancy. These anemic pregnant mothers contribute maximally in our high National MMR (maternal mortality ratio). At Ratlam, she started organising free health check up camps in these selected areas for pregnant mothers. Gradually many people joined her and a full team by the name of Shri Seva Sansthan was ready. The team is camping regularly, anemic mothers are educated and treated, follow up is very important part of the project. Many high risk cases are followed till safe delivery. She has organised hundreds of such camps and maternal mortality of this tribal district has reduced to less than national average and as a result of better care of pregnant mothers the death of new barns also reduced to less than state average. For preparing healthy future mothers she is organising school health check up and hemoglobin raising camps and following anemic children till anemia is corrected. She could reach more than 35 lacs children till date, under her 12/12/12 programme, meaning thereby that hemoglobin of every child should be 12 gm by 12 years of age and if not, definitely by the time he/she reaches class 12th.

4. For her dedicated service, Dr. Joshi has been honoured and awarded at almost every level, some of them are, 100 women achievers 2016 by the Ministry of Women and Child Development; felicitated during service by then Railway Minister, Vishisht Seva Medal for contributing in Prime Minister's 20 point programme in 1983; by National professional body FOGS - Distinguished Community Service Award 2014 and Proud of FOGSI Award 2019; Women Pride Award 2014; Dainik Bhaskar Gr. Artiest Reality Award for translating research into practice 2014, by Asian Research Institute; Lions International for Women Empowerment 2019 etc.





डॉ. (सुश्री) लीला जोशी

डॉ. (सुश्री) लीला जोशी, एक गायनोकोलोजिस्ट हैं जिन्हें रतलाम की मदर टेरेसा के रूप में भी जाना जाता है। वह मध्य प्रदेश के जनजातीय बहुल रतलाम जिले की जनजातीय, ग्रामीण और शहरी मलिन बस्तियों में एनिमिया के कारण होने वाली मातृ मृत्यु दर को कम करने के लिए दो दशक से अधिक समय से कार्य कर रही हैं।

2. 20 अक्तूबर, 1938 को जन्मी डॉ. (सुश्री) जोशी ने 1961 में एम.जी.एम. मेडिकल कॉलेज, इंदौर से अपनी एमबीबीएस, तथा मुंबई और गुजरात से पोस्ट–ग्रेजुएशन उत्तीर्ण की। वह भारतीय रेल स्वास्थ्य सेवा की नौकरी में आईं और रेल मंत्रालय, नई दिल्ली में कार्यकारी निदेशक (एच) सहित विभिन्न पदों पर सेवा की और वर्ष 1996 में मुख्य चिकित्सा निदेशक, भारतीय रेल, गुवाहाटी, असम से सेवानिवृत्त हुईं।

3. सेवानिवृत्ति के बाद, डॉ. (सुश्री) जोशी रतलाम में (मेट्रो शहरों की बजाय) आकर बस गईं। उनका विशेष मिशन इस पिछड़े समुदाय से एनिमिया रोग को मिटाना था। आदिवासियों के बीच एनिमिया रोग बहुत अधिक पाया जाता है और गर्भावस्था के दौरान ये भयंकर रूप धारण कर लेता है। हमारे उच्च मातृ मृत्यु अनुपात में एनिमिया से पीड़ित गर्भवती माताओं की संख्या सबसे अधिक है। उन्होंने रतलाम के इन चुनिंदा क्षेत्रों में गर्भवती महिलाओं के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविरों का आयोजन शुरू किया। धीरे–धीरे उनके साथ बहुत से लोग जुड़ते गए और श्री सेवा संस्थान नाम से एक पूरी टीम तैयार हो गई। यह टीम नियमित रूप से शिविर लगाती है, जिनमें एनिमिया से ग्रस्त माताओं को जानकारी दी जाती है और उनका उपचार किया जाता है, नियमित तौर पर जांच करना इस परियोजना का महत्वपूर्ण अंग है। ज्यादा जोखिम वाले कई मामलों में सुरक्षित प्रसव होने तक बार–बार जांच की जाती है। उन्होंने इस तरह के सैकड़ों शिविरों का आयोजन किया है और इस जनजातीय जिले की मातृ मृत्यु दर राष्ट्रीय औसत से भी कम हो गई है। गर्भवती महिला की बेहतर देखभाल के परिणामस्वरूप, नवजात शिशुओं की मृत्यु दर भी राज्य औसत से कम हो गई है। वह, भविष्य में स्वस्थ माताओं को तैयार करने के लिए स्कूल में स्वास्थ्य जांच करने और हीमोग्लोबिन बढ़ाने के लिए शिविरों का आयोजन करती हैं और जब तक एनिमिया ठीक नहीं हो जाता वे एनिमिया से ग्रस्त बच्चों का इलाज करती रहती हैं। अपने 12/12/12 कार्यक्रम के तहत वह अब तक 35 लाख से अधिक बच्चों की जांच कर चुकी हैं, इसका अर्थ यह है कि 12 वर्ष की आयु तक के हर बच्चे का हीमोग्लोबिन 12 ग्राम होना चाहिए और यदि ऐसा नहीं है तो, बारहवीं कक्षा में पहुंचने तक निश्चित रूप से इतना हो जाए।

4. डॉ. (सुश्री) जोशी की समर्पित सेवाओं के लिए उन्हें लगभग हर स्तर पर सम्मानित और पुरस्कृत किया गया है, जिनमें महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा 100 वूमैन एचीवर्स, 2016; 1983 में सेवा के दौरान तत्कालीन रेल मंत्री द्वारा सम्मान; प्रधान मंत्री के 20 सूत्री कार्यक्रम में योगदान के लिए विशिष्ट सेवा पदक; राष्ट्रीय पेशेवर संस्था एफओजीएस द्वारा विशिष्ट सामुदायिक सेवा पुरस्कार, 2014 और प्राउड ऑफ एफओजीएसआई अवार्ड 2019; वीमैन प्राइड अवार्ड, 2014; और एशियन रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा 2014 में शोध को व्यवहार में उतारने के लिए दैनिक भास्कर ग्रेट आर्टिएस्ट रियलिटी अवार्ड; महिला सशक्तीकरण, 2019 के लिए लाइंस इंटरनेशनल आदि शामिल हैं।